1

जब पौलुस ने घर को लिखा

(फिलिप्पियों 1:1, 2)

हमें पत्र लिखना अच्छा लगता है, विशेषकर अपने प्रियजनों को। जब मेरा परिवार ऑस्ट्रेलिया में रहता था, तो हम डाकिए की राह देखते रहते थे। जब वह आकर निकल जाता तो हम भागकर अपने घर के बाहर लगे डाक बॉक्स में देखने के लिए जाते कि अमेरिका में हमारे परिवार या किसी मित्र का पत्र तो नहीं आया। इस पत्र का आरम्भ फिलिप्पी की कलीसिया के नाम पौलुस के ''प्रेम पत्र'' यानी उसकी पत्री के अध्ययन से होता है।

मैं अपने इस अध्ययन का नाम ''आनन्द भरी मसीहियत'' रख रहा हूं और इस विशेष पाठ को ''जब पौलुस ने घर को लिखा'' नाम दे रहा हूं। इस आरम्भिक पाठ में हम मुख्यतया पहली दो आयतों पर बात करेंगे:

> मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से,
>
> सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों और सेवकों समेत। हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे (आयतें 1, 2)।

हम संक्षेप में पत्र की समीक्षा करेंगे। इससे हमें अपनी शृंखला के लिए पृष्ठभूमि मिल जाएगी।

तथ्य

1 और 2 आयतों तक पहुंचने का एक ढंग शब्दों और वाक्यांशों की क्रम में समीक्षा करना है। पहला शब्द है ''पौलुस।''[1] यह अन्यजातियों का महान प्रेरित था, जो सम्भवतया पत्र के लिखे जाने के समय रोम में कैद था। पौलुस ने कैद में होने (1:13) और मृत्यु की सम्भावना की बात की (1:21-24)। रोम ही वह स्थान लगता है क्योंकि प्रेरित ने कहा कि उसके कैदी होने के कारण मसीह का कार्य ''सारी पलटन और शेष सब लोगों में'' प्रसिद्ध हो गया है (कैसर की रखवाली करने वाली श्रेष्ठ टुकड़ियों में) (1:13)। इसके अलावा उसने ''कैसर के घराने के'' लोगों की ओर से भी सलाम भेजा (4:22)।

आयत 1 ''और तीमुथियुस'' शब्दों के साथ आगे बढ़ती है। तीमुथियुस पौलुस का सहयात्री एक जवान प्रचारक था। जो उसके यह लिखने के समय उसके साथ था। तीमुथियुस का नाम साथ आने का अर्थ यह नहीं है कि वह पुस्तक का सहलेखक था; पौलुस ने पूरी पुस्तक में उत्तम पुरुष एकवचन का ही इस्तेमाल किया (देखें 1:3, 6-9, 12)। इसके बजाय प्रेरित सम्भवतया इस पर ज़ोर दे रहा था कि तीमुथियुस उसका सहकर्मी है-और उसके शब्द प्रयोग से संकेत मिल सकता है कि उसने पत्र को लिखवाया, जबकि तीमुथियुस ने इन शब्दों को लिखा।

पौलुस ने अपना और तीमुथियुस का परिचय ''मसीह यीशु के दास'' के रूप में करवाया। ''दास'' शब्द का अर्थ ''गुलाम'' होता है। KJV में चाहे इसका अनुवाद ''सेवक'' के अर्थ वाले शब्द (*diakonos*) का बहुवचन रूप नहीं, बल्कि ''गुलाम'' समान शब्द (*doulos*) है। इस शब्द का इस्तेमाल दोनों इवैंजलिस्टों के बारे में कई सच्चाइयों का सुझाव देता है: (1) यीशु उनका मालिक था, वे ''दाम देकर मोल लिए गए'' थे (1 कुरिन्थियों 7:23)। (2) वे मसीह के नियन्त्रण में थे और उन्होंने अपने आप को उसकी इच्छा के आगे सौंप दिया था। (3) सप्तति अनुवाद (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) में इस्तेमाल किए गए वचन के अनुसार वे उपयोगी सेवक थे। यह उन पांच पत्रों में से एक है, जिसमें पौलुस ने अपना उल्लेख प्रेरित के रूप में नहीं किया, शायद इसलिए क्योंकि उसे फिलिप्पी की कलीसिया को अपना सबूत देने की आवश्यकता नहीं थी।

यह पत्र ''सब पवित्र लोगों के नाम'' है ''जो मसीह यीशु में'' है। ''पवित्र लोगों'' शब्द का अर्थ वे लोग नहीं हैं ''जो पाप रहित होने की सिद्ध अवस्था तक पहुंच गए हैं।'' यूनानी शब्द का अनुवाद *hagios* (''पवित्र किए हुए के लिए शब्द'') का सम्प्रदान कारक बहुवचन है, जिसका अर्थ है ''अलग किया हुआ।'' इस शब्द का इस्तेमाल ''परमेश्वर के पवित्र लोग'' (NCV), परमेश्वर की सेवा के लिए ''अलग किए हुए'' लोगों के लिए होता है। उस स्थान में यह सभी मसीही लोगों के लिए था।

इन विशिष्ट ''पवित्र लोगों'' की पहचान जो ''फिलिप्पी में रहते हैं'' के रूप में हुई। फिलिप्पी मकिदुनिया का एक नगर था।[2] बड़ा न होने के बावजूद फिलिप्पी एक ऐतिहासिक महत्व वाला नगर था। मकिदुन फिलिप्प यूनान को इकट्ठा करने के अपने उद्देश्य के लिए इसी क्षेत्र का सोना इस्तेमाल करता था। उसने अपने नाम के अनुसार इस नगर का नाम बदलकर ''फिलिप्पी'' रख दिया। कई सालों बाद निकट ही इतिहास के बड़े युद्ध लड़े गए। जिसमें ओक्टेवियन और एंटनी ने रोमी साम्राज्य पर नियन्त्रण पाते हुए ब्रूटस और केसियुस को पराजित किया। विजय के सम्मान में फिलिप्पी को रोमी उपनिवेश बनाया गया (देखें प्रेरितों 16:12)। परन्तु आज फिलिप्पी का स्मरण मुख्यतया इसके सांसारिक इतिहास का कारण नहीं, बल्कि पौलुस नाम के प्रचारक के कारण लिया जाता है, जो सुसमाचार को लेकर वहां गया (प्रेरितों 16:6-40)।

फिर मण्डली के अगुओं का उल्लेख है ''अध्यक्षों और डीकनों'' का उल्लेख है। KJV में ''बिशपों'' है। यह 1611 के ज़माने की धार्मिक शब्दावली से वचन में जोड़ा गया था। ''अध्यक्ष'' यूनानी भाषा के मिश्रित शब्द *epikopos* से लिया गया है। जो ''देखता है'' (skopos) के लिए शब्द के साथ ''ऊपर'' (*epi*) के अर्थ वाले पूर्वसर्ग को मिलाता है।

अध्यक्ष का अंग्रेज़ी शब्द overseers कलीसिया के प्राचीनों के लिए एक नाम है (देखें प्रेरितों 20:17, 28; तीतुस 1:5, 7; 1 पतरस 5:1, 2)। NCV जो ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करता है जिसे आम लोग समझ सकते हैं, उसमें ''overseers'' अध्यक्ष या ''bishops'' के बजाय ''elders'' प्राचीन है। NCV का अनुवाद चाहे अक्षरश: नहीं है पर यह शब्दावली इस बात का संकेत देती है कि अनुवादित कलीसिया के ऐल्डरों को नये नियम के समय में ओवरसीयर यानी देखभाल करने वाले मानते थे। ''Overseers'' अध्यक्ष उस ज़िम्मेदारी का संकेत देता है, जो एल्डरों की हो सकती है यानी उनका काम मण्डली से जुड़ी हर बात की निगरानी रखना,

विशेषकर उन आत्माओं की जिनकी देखभाल का जिम्मा उन्हें दिया गया है (देखें 1 पतरस 5:2; इब्रानियों 13:17)।

''Deacons'' शब्द का मूल अर्थ ''सेवक'' है। ''Deacons'' ''सेवक'' के लिए यूनानी शब्द के बहुवचन रूप (*diakonos*) का अंग्रेज़ीकरण है। इस संदर्भ में यह कलीसिया के विशेष सेवकों के लिए है (देखें 1 तीमुथियुस 3:8-13) या ऐल्डरों के साथ और उनके अधीन काम करते हैं।

पौलुस ने केवल इसी पत्र में अपने अभिवादन में मण्डली के अगुओं को अलग किया। यहां शायद उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसका एक उद्देश्य फिलिप्पियों को उनके द्वारा दी गई आर्थिक सहायता के लिए धन्यवाद देना था और आम तौर पर धन को लेने और उसे बांटने का काम मण्डली के अगुवे ही करते थे।

यह अभिवादन इन शब्दों से समाप्त होता है: ''हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे।'' पौलुस का यह अभिवादन करने का अर्थ था। यही शब्द उसके रोम, कुरिन्थुस और गलातियों और इफिसुस के नाम उसके पत्रों में मिलते हैं। उसके अन्य पत्रों में थोड़ा बहुत फर्क हो सकता है। अभिवादन ''अनुग्रह'' के यूनानी अभिवादन को इब्रानी ''शांति'' (इब्रा.: *shalom*) के इब्रानी अभिवादन को मिलाता है।

एहसास

तथ्यों की पिछली चर्चा पहली दो आयतों के टीका में दिए जाने वाले ढंग जैसी ही है। परन्तु मैं यह सुझाव दूंगा कि पौलुस की आरम्भिक बात इतनी जल्दी नकारने का अर्थ उसके शब्दों के पीछे के अहसास यानी भावनाओं को न समझना है। 1:7क में पौलुस ने लिखा, ''उचित है कि मैं तुम सब के लिए ऐसा ही *विचार करूं, क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो*।''

भावनाएं

फिलिप्पी की कलीसिया पौलुस के लिए विशेष महत्व रखती थी। एवन मिलोन ने इसे पौलुस की ''प्रिय कलीसिया'' कहा है।[3] अध्याय 4 में प्रेरित ने वहां के लोगों को ''मेरे प्रिय भाइयो, जिसमें मेरा जी लगा रहता है, जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो ...'' (4:1)। इस पत्र में पौलुस शान्त तर्क शास्त्री, गम्भीर तर्कशास्त्री या विश्वास का अधीर रक्षक नहीं था, बल्कि वह ऐसा आदमी था, जो दिल से अपने दोस्तों को लिख रहा था। इसीलिए मैंने इस पाठ को ''जब पौलुस ने घर को लिखा'' नाम दिया है।

जब मैं ''घर'' शब्द का इस्तेमाल करता हूं, तो मेरे कहने का अर्थ यह नहीं होता कि पौलुस का पालन-पोषण फिलिप्पी में हुआ था। उसका जन्म तर्सुस में और शिक्षा यरूशलेम में हुई थी (प्रेरितों 22:3)। अपने मन परिवर्तन के बाद पौलुस सारे संसार का नागरिक बन गया। वह खूब घूमा और उसका घर वहीं बन गया, जहां मसीह में उसके भाई और बहनें मिले। इस मामले में पौलुस मेरा भाई लगता है। जब मैं छोटा था तो मेरे माता-पिता कभी इधर और कभी उधर जाते रहते थे। जब लोग मुझसे पूछते, ''तुम्हारा घर कहां है?'' तो कई बार मेरा उत्तर यही होता था, ''मैं ओक्लाहोमा के पैनहैंडल में पैदा हुआ, ओक्लाहोमा के दक्षिण पश्चिम कोने में बड़ा हुआ,

सैंट्रल ओक्लाहोमा से हाई स्कूल पास किया, वैस्ट टैक्सस में कॉलेज गया और सैंट्रल और ईस्टर्न ओक्लाहोमा ऑस्ट्रेलिया, नॉर्थ टैक्सस आरकैंसा में प्रचार किया है। पर घर मेरा वहीं है जहां मेरा परिवार और मेरे मित्र हैं।''

यादें

यदि यह सही है कि ''घर वहीं होता है, जहां दिल हो,''[4] तो पौलुस आसानी से फिलिप्पी को अपना ''घर'' कह सकता था। फिलिप्पी के पवित्र लोगों के नाम अपना पत्र आरम्भ करते हुए मैं उसे वर्षों से अपने सम्बन्धों का ध्यान करने की कल्पना कर सकता हूं।

उसके विचार शायद उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा से आरम्भ हुए जब वह सीलास के साथ मण्डलियों में दोबारा गया था (देखें प्रेरितों 15:36-41.) लुस्त्रा या दीर्बे में युवा तीमुथियुस उनके साथ हो लिया (प्रेरितों 16:1-5)। पौलुस ने इफिसुस को जाने के लिए जो एशिया के रोमी राज्य की राजधानी था, रोमी मार्ग पर आगे बढ़ने की योजना बनाई, पर आत्मा ने रोक दिया (16:6)। फिर उसने बितुनीया में उत्तर को जाने का निश्चय किया, पर वहां उसका रास्ता रोक लिया गया (16:7)। वह एजियन समुद्र पर त्रोआस नामक बंदरगाह में रुक गया (16:8)। वहां उसे ''मकिदुनी बुलाहट'' यानी वह दर्शन मिला, जिसमें कोई कह रहा था, ''पार उतरकर मकिदुनिया में आ और हमारी सहायता कर'' (16:9)। वैद्य लूका के साथ यह छोटा दल नियापुलिस को जाने के लिए समुद्री सफर करने लगे (16:10, 11)। वहां से वे फिलिप्पी में दस मील तक अन्दर गए (16:12)।[5]

वे इगनेशियन मार्ग पर नगर में गए होंगे, जो भीड़-भाड़ वाला रोमी रस्ता था, जिससे रोमी साम्राज्य के पूर्वी और पश्चिमी राज्यों का मुख्य कारोबार होता था। रोमी बस्ती होने के कारण पौलुस को लगा कि फिलिप्पी छोटा रोम ही होगा। नगर में प्रवेश करने पर पौलुस सुसमाचार सुनाने के लिए नये इलाके में जा रहा था। उसने फिलिप्पी में और उसके अगले इलाके में अपनी सेवकाई की बात करने के लिए ''पहले दिन'' और ''सुसमाचार प्रचार के आरम्भ'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया (फिलिप्पियों 1:5; 4:15)।

पौलुस नये इलाके में अपनी सेवकाई का आरम्भ आम तौर पर आराधनालय में जाकर करता था; परन्तु स्पष्टतया फिलिप्पी की जनसंख्या में दस यहूदी पुरुष नहीं थे, जो किसी जगह पर आराधनालय बनाने के लिए आवश्यक संख्या थी। प्रेरित ने अन्त में नगर के बाहर नदी के तट पर आराधना करती स्त्रियों का एक समूह देखा (प्रेरितों 16:13)। उसने लुदिया नामक एक स्त्री और उसके घराने के लोगों को वचन बताया और उन्हें बपतिस्मा दिया (16:14, 15)।

इसके थोड़ी देर बाद पौलुस को एक गुलाम लड़की में से अशुद्ध आत्मा निकालने के दोष में गिरफ्तार कर लिया गया (16:16-21)। उसे और सीलास को पीटा गया और कैद में डाल दिया गया था (16:22-24)। आधी रात को एक भूकम्प ने पौलुस और अन्य कैदियों को छुड़ा लिया (16:25, 26)। इस घटना के आस-पास की घटनाओं से उनके दारोगे का मन नरम हो गया और इससे उसे और उसके घराने को वचन सुनाने और बपतिस्मा देने का अवसर मिल गया (16:27-34)। इस प्रकार फिलिप्पी की नन्ही कलीसिया में नये सदस्य जुड़ गए।

अगली सुबह पौलुस और सीलास को नगर के अधिकारियों द्वारा छोड़ दिया गया। परन्तु

उन्हें वहां से चले जाने को कहा गया (16:35-39; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:2)। फिलिप्पी के नये मसीहियों से थोड़ी देर मिलने के बाद पौलुस, सीलास और तीमुथियुस काम को आगे बढ़ाने के लिए वैद्य लूका को छोड़कर वहां से चल दिए।[6]

पौलुस फिलिप्पी में कुछ सप्ताह से अधिक नहीं रह पाया होगा; तौभी वहां के मसीही लोगों का उसके मन में विशेष स्थान रहा। चले जाने के बाद वह उनके सम्पर्क में रहा और वे उसके सम्पर्क में, फिलिप्पी से पौलुस प्रचार करने के लिए थिस्सलुनीके में चला गया (प्रेरितों 17:1)। वहां फिलिप्पियों ने उसके लिए सहायता भेजी (फिलिप्पियों 4:15, 16)। फिर पौलुस ने थोड़ी देर बिरिया और अथेने में काम किया और फिर कुरिन्थुस में चला गया (प्रेरितों 17:10, 15; 18:1)। फिर से फिलिप्पी के भाइयों ने उसकी सहायता की (2 कुरिन्थियों 11:9)। यही तरीका कई साल तक चलता रहा (देखें फिलिप्पियों 1:5)।

पौलुस जब भी उसे अवसर मिलता फिलिप्पी में अपने भाइयों और बहनों से मिलने का विशेष प्रयास करता। अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर, इफिसुस में लगभग तीन साल रहने के बाद, वह मकिदुनिया में चला गया (प्रेरितों 20:1; 2 कुरिन्थियों 2:13; 7:5), जहां फिलिप्पी नगर था। अपनी तीसरी यात्रा के अन्त में वह कुरिन्थुस को छोड़कर यरूशलेम के लिए निकल गया। यरूशलेम के लिए सीधा जहाज़ पकड़ने के बजाय, वह पहले उत्तर में फिलिप्पी में गया (प्रेरितों 20:3, 6) जहां वैद्य लूका उनके साथ हो लिया।

यरूशलेम में पहुंचने पर पौलुस को गिरफ्तार कर लिया गया (प्रेरितों 21:15-26:32)। कई साल की कैद के बाद (24:27) उसे कैसर के सामने पेश होने के लिए रोम भेज दिया गया (27:1-28:31)। पेशी की प्रतीक्षा के दौरान उसने ''जेल की पत्रियां'' लिखीं। उन पत्रियों में एक कलीसिया के नाम पत्र था, जो उसके मन से कभी निकली नहीं और वह फिलिप्पी की मण्डली थी। (अन्य ''जेल की पत्रियां'' इफिसियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन है; देखें इफिसियों 6:20; कुलुस्सियों 4:3; फिलेमोन 10)।

प्रेरणा

किसी भी पत्र के लिए प्रेम पर्याप्त प्रेरणा है; जैसा कि पूरी पत्री में हम पढ़ते हैं ''यही निष्कर्ष निकलता है कि पौलुस के मन में कई विचार थे। एक तो वह सहायता थी, जो फिलिप्पी ने उसके रोम में रहते भेजी थी। फिलिप्पियों 1:5 में पौलुस ने ''पहले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार फैलाने में सहभागी'' रहने की बात की। 4:14 में उसने उसके साथ सहभागिता करने की बात की। स्पष्टतया एक समय ऐसा आया था, जब उनका सम्पर्क उससे टूट गया (4:10); जब उन्हें पता चला कि वह कहां है और उसे क्या चाहिए तो उन्होंने अपना एक व्यक्ति इपफ्रुदीतुस उसके पास भेजा। इपफ्रुदीतुस फिलिप्पी से सहायता लेकर आया; इससे भी बढ़कर उसने भी व्यक्तिगत रूप से प्रेरित की सेवा की (देखें 2:25)। पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया कि उसे ''इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी'' उनकी चीज़ें मिल गई हैं, जो ''सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान हैं, जो परमेश्वर को भाता है'' (4:18)। प्रेरित का यह पत्र लिखने का एक उद्देश्य फिलिप्पी के मसीही लोगों को ''धन्यवाद'' कहना था।

उसके लिखने का एक और कारण स्वयं इपफ्रुदीतुस के साथ जुड़ा था। इपफ्रुदीतुस रोम

में रहने के दौरान इतना बीमार हो गया था कि मरने को हो गया था (2:25, 27, 30)। उसकी बीमारी की खबर फिलिप्पी में पहुंच गई थी और वहां के मसीही परेशान थे (2:26)। पौलुस ने लिखकर और इपफ्रुदितुस को उनके पास वापस भेजकर उनके जी को ठण्डा किया (2:25, 28)। इपफ्रुदितुस ने वापस जाते समय फिलिप्पियों को वह पत्र दे दिया होगा।

फिलिप्पी में कलीसिया के लिए पौलुस की एक और चिंता भी थी। उस नगर में उसके साथ दुर्व्यवहार हुआ था और स्पष्टतया सताव जारी था। उसने फिलिप्पियों से ''किसी बात में [अपने] विरोधियों से भय नहीं'' खाने का आग्रह किया (1:28क)। उसने उन्हें लिखा कि ''क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिए दुख भी उठाओ और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो, कि मैं वैसा ही करता हूं'' (1:29, 30)। उन्हें प्रोत्साहित करने की कोशिश करने का पौलुस का एक ढंग उन्हें अपनी योजनाएं बताने के द्वारा था। वह उनके पास शीघ्र ही तीमुथियुस को भेजना चाहता था (2:19-23)। उसके कैद से छूट जाने और जेल में उनके पास आने की उम्मीद थी (1:26; 2:24)। एक और जेल की पत्री में पौलुस ने यह भरोसा जताया कि वह जल्द छूट जाएगा (देखें फिलेमोन 22)।

इसी दौरान वह उन्हें सामर्थ और तसल्ली देने के लिए संदेश भेजना चाहता था। अपने सभी पत्रों में जैसे पौलुस की आदत थी, उसने उनकी तारीफ़ करने (देखें 1:3-7), उन्हें आज्ञा देने (देखें 2:5) उन्हें सतर्क करने (देखें 3:2) और उन्हें सुधारने का अवसर लिया (देखें 4:2)

सुधार के विषय में कुछ टीकाकारों का मानना है कि फिलिप्पी की कलीसिया में मुख्य आत्मिक समस्याएं थीं। पौलुस ने वहां के मसीही लोगों को ''एक मन'' (2:2) होने की आज्ञा दी, और टीकाकार इसे इस प्रमाण के रूप में देखते हैं कि मण्डली में फूट थी। इसके अलावा प्रेरित ने अपने पाठकों को बताया था, ''सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो'' (2:14); जिस कारण कुछ लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि सभी सदस्य शिकायत करते हैं। परन्तु पत्र में दिए गए विभिन्न विषय कहीं भी किसी भी कलीसिया के लिए लाभदायक हो सकते हैं (और हैं), चाहे उस मण्डली में वही समस्याएं हों या न हों ।

पौलुस ने मण्डली के सामने आने वाली कुछ समस्याओं का नाम दिया: वहां दो बहनें स्पष्टतया मिलकर नहीं चलती थीं (4:2) और कलीसिया को झूठे शिक्षकों से सावधान रहने की चेतावनी दी गई (3:2, 18, 19)। तौभी मैं यह ज़ोर देता हूं कि पौलुस ने फिलिप्पियों के नाम यह पत्र कई समस्याओं को सुधारने के लिए *नहीं* लिखा जैसा कि 1 और 2 कुरिन्थियों है। झगड़े और गुटबाजियों के लिए पौलुस की चिंता के लिए बाहरी प्रेरणा को जानने के लिए हमें उस नगर से आगे देखने की आवश्यकता नहीं है, जहां पौलुस लिख रहा था (देखें फिलिप्पियों 1:15, 16)। पौलुस नहीं चाहता था कि फिलिप्पी में उसकी प्रिय कलीसिया को वे समस्याएं आएं जो रोम की कलीसिया में थीं।

यह पत्र भरोसे, आनन्द सहभागिता और एकता का सांस लेता है। यह एक *प्रेम* पत्र है।

संरचना

अब तक आप को समझ आ जाना चाहिए कि पौलुस ने फिलिप्पियों के नाम पत्र क्यों

लिखा। परिचायक टिप्पणियों को छोड़ने से पहले हम पुस्तक की संरचना को देख लें।

एक पत्र

पहली बात यह कि यह एक *पत्र* है और इस कारण इसमें पहली सदी में लिखे जाने वाले पत्रों में पाई जाने वाली आम बातें हैं। उन में से कुछ आम बातें इस प्रकार हैं:

- लेखक का परिचय: ''मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से'' (1:1क)।
- प्राप्तकर्ताओं का परिचय: ''सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों और सेवकों समेत।'' (1:1ख)।
- अभिवादन: ''हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे'' (1:2)।
- धन्यवाद: ''मैं जब-जब तुम्हें स्मरण करता हूं, तब-तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। और जब कभी तुम सब के लिए विनती करता हूं, तो सदा आनन्द के साथ विनती करता हूं। इसलिए कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो'' (1:3-5; साथ में आयतें 6-11)।
- संदेश: पत्र का मुख्य भाग (1:12-4:23)। नोट: पत्र के मुख्य भाग का समापन आशीष और अभिवादन की अतिरिक्त बातों से करना आम बात थी। पौलुस ने ऐसा ही किया (4:21-23)।

आप चकित हो सकते हैं कि लेखक का नाम अन्त में होने के बजाय पत्र के आरम्भ में क्यों है, जैसा कि आज हम करते हैं। उस ज़माने में पत्र, स्क्रोल या पत्रियों के ऊपर लिखे जाते थे। मुख्य जानकारी पत्री के आरम्भ में लिखी जाती थी, ताकि उसे खोलते ही प्राप्तकर्त्ता को पता चल जाए कि इसे किसने और क्यों लिखा है।

सामग्री

फिलिप्पियों की पुस्तक केवल एक पत्र नहीं, बल्कि एक *व्यक्तिगत* पत्र है। इसी कारण यह बिना स्पष्ट संगठन के यानी बदलाव का ध्यान किए बिना, एक से दूसरे विषय में बदल जाता है। ''यह एक ऐसी बातचीत की तरह है जिसकी विषय वस्तु दोस्तों के बीच होने वाली औपचारिक बातचीत में बिना बताए बदलता रहता है।''[7] इसलिए पुस्तक की कोई भी रूपरेखा थोड़ी आविष्कारक होनी आवश्यक है। जी. कैम्पबेल मोर्गन ने पूछा, प्रेम पत्र की समीक्षा कौन कर सकता है?[8] तौभी पुस्तक की कई सहायक रूपरेखाएं बनाई गई हैं। ऐवन मिलोन की एक श्रेष्ठ रूपरेखा इस प्रकार है:[9]

अध्याय 1: मसीह हमारा *उदेश्य* है (देखें आयत 21)।
अध्याय 2: मसीह हमारा *नमूना* है (देखें आयत 5)।
अध्याय 3: मसीह हमारा *इनाम* है (देखें आयतें 13, 14)।
अध्याय 4: मसीह हमारा *उपाय* है (देखें आयतें 13, 19)।

(जैसा कि हम देखेंगे) मन (सोच) पुस्तक का मुख्य विषय-वस्तु है, इसलिए एक लेखक ने अपनी रूप रेखा में इस विषय का इस्तेमाल किया:[10]

अध्याय 1: *अकेला* मन।
अध्याय 2: *अधीन* मन।
अध्याय 3: *आत्मिक* मन।
अध्याय 4: *सुरक्षित* मन।

परन्तु शायद पुस्तक के लिए बेहतरीन ढंगों में से एक इसकी सामग्री को बताना है:

(1) पौलुस का अभिवादन (1:1, 2)।
(2) फिलिप्पियों के लिए धन्यवाद और प्रार्थना (1:3-11)।
(3) पौलुस की कैद और सामान्य अर्थ में कष्ट (1:12-30)।
(4) नम्र और आज्ञाकार होकर मसीह की तरह एकता को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन (2:1-18) यह पत्र का बड़ा धर्मशास्त्रीय भाग है।
(5) तीमुथियुस को भेजने की भावी योजना और इपफ्रुदीतुस को भेजने की तात्कालिक योजना (2:19-30)।
(6) झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनियां: जिसमें पौलुस स्वयं मानने के लिए उपयुक्त उदाहरण के रूप में था (3:1-21)।
(7) विभिन्न शिक्षाएं-एकता, आनन्द और सही सोच के लिए (4:1-9)। हम में से कइयों के लिए यह इस पत्री के सबसे अर्थ भरपूर भागों में से एक है।
(8) उनके दान के लिए संतुष्टि पर शिक्षा देते हुए आभार व्यक्त किया (4:10-19)।
(9) सारांश-व्यक्तिगत अभिवादनों और आशीष के साथ (4:20-23)।

विषय-वस्तु

लगता तो है कि इस पत्र में भीतरी संगठन की कमी है पर इसमें कई विषय बार-बार मिलते हैं। उनमें से एक ''सहभागिता'' या ''बांटना'' है (देखें 1:5; 2:1, 25; 4:3, 15)। सोच और विचार पर एक और ज़ोर है: पूरी पुस्तक पढ़ते हुए आप ''मन,'' ''स्वभाव,'' ''विचार'' या ''स्मरण'' जैसे शब्दों को देखें। इसके अलावा सताव और कष्ट पर भी रेखांकित करने वाली फिलास्फ़ी है।

प्रभु विषयों में से एक ''आनन्द'' है। फिलिप्पियों की पुस्तक को ''आनन्द का भजन'' कहा गया है।[11] पुस्तक में आनन्द और आनन्दित के लिए ''joy'' आनन्द और ''rejoice'' आनन्दित शब्द मिलते हैं (KJV में सोलह बार)। एक वानगी यह है:

> प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो। तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो: प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय

और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। (4:4-7)

पत्र में आनन्द से सम्बन्धित ''धन्यवाद,'' ''शान्ति'' और ''संतुष्टि'' जैसे आनन्द से सम्बन्धित शब्द हैं। इसी लिए मैं इस पुस्तक के अपने अध्ययन को ''*आनन्दमयी मसीहियत*'' का नाम देता हूं।

इस बात को समझें कि यह आनन्द ''सकारात्मक मानसिक व्यवहार'' का ही परिणाम नहीं है।[12] इसके बजाय पुस्तक स्पष्ट कर देती है कि हमारे आनन्द का मूल *मसीह में* है। ''यीशु मसीह और उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना'' विषय इस पत्र की भूमिका है:

- पदनाम ''मसीह'' अपने आप में सत्रह बार मिलता है (देखें 1:10)।
- नाम ''यीशु'' केवल एक बार मिलता है (2:10)।
- ''मसीह यीशु'' या ''यीशु मसीह'' (''प्रभु'' शब्द के साथ नहीं) का मेल सोलह बार मिलता है (देखें 1:1)।
- शीर्षक ''प्रभु'' अपने आप केवल नौ बार मिलता है (देखें 1:14)।
- ''प्रभु यीशु'' मसीह के बिना का मेल एक बार मिलता है (2:19)।
- पूरा शीर्षक ''प्रभु यीशु मसीह'' या ''मेरा प्रभु यीशु मसीह'' चार बार मिलता है (देखें 1:2)। यह शीर्षक 3:20 में चर्म पर पहुंचता है जहां पौलुस ने इससे पूर्व ''उद्धारकर्त्ता'' शब्द लगाया।[13]
- यीशु की मृत्यु के भी संकेत हैं (देखें 3:10, 18), सुसमाचार के नौ और हवालों के साथ (देखें 1:5)।[14]

पुस्तक में ''मसीह में'' या इसके समान मुख्य वाक्यांश है; इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल 16 बार हुआ है (देखें 1:1, 26; 4:4)। NASB में अन्य हवाले; उदाहरण के लिए, (1:13) में मूलतया ''मसीह में मेरी कैद'' है। ''मसीह में'' पौलुस की पसंदीदा अभिव्यक्तियों में से एक थी (देखें रोमियों 3:24; 6:11; 8:1; 9:1)। उसने इसका इस्तेमाल उस सम्बन्ध को बताने के लिए किया जो प्रभु के साथ हमारा है[15]– वह सम्बन्ध जो इतना विशेष, इतना निकट, इतना गहरा है कि इसे केवल यही कहकर बताया जा सकता है कि हम ''उस में '' हैं। मसीही व्यक्ति ''मसीह में'' वैसे ही रहता है, जैसे पक्षी हवा में रहता है, जैसे मछली पानी में रहती है और जैसे पेड़ की जड़ें ज़मीन में होती हैं। मसीही व्यक्ति अपने साथ के लोगों से ''अलग'' है क्योंकि उसे अपने आस-पास यीशु की उपस्थिति का ध्यान रहता है!

सारांश

कुछ देर पहले की बात है मैंने अट्ठासी वर्षीय अपनी मां को बताया कि मेरी अगली पुस्तक फिलिप्पियों पर होगी। उसने मुंह ऊपर किया और कहने लगी ''मुझे उस पुस्तक से प्रेम है!'' फिर वह सोचती हुई बोली, ''पर मेरा जीवन उसकी शिक्षा के अनुकूल नहीं रहा है।'' इससे मुझे पुस्तक की उन आयतों पर विचार करने को विवश होना पड़ा जो मुझे चलाती हैं:

- ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो!'' (4:4)।

- ''सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो'' (2:14)।
- ''... मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं'' (4:11)।

इस पुस्तक का अध्ययन करना मेरे लिए एक चुनौती होगा और शायद आपके लिए भी। परन्तु मैं इसकी राह देख रहा हूं क्योंकि सावधान करने वाली चुनौतियों से सुधरकर हमें अद्‌भुत शांति मिलती है। ''आनन्दमयी मसीहियत'' का अध्ययन करना रोमांचकारी होना चाहिए!

टिप्पणियां

[1]क्लास में आप इन शब्दों और वाक्यांशों का जवाब देने को कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, पहला शब्द पढ़ने के बाद, आप क्लास से वह बताने को कह सकते हैं जो उन्हें पौलुस के बारे में पता है। [2]विभिन्न नगरों का नाम बताते हुए आप बाइबल के देशों वाले नक्शे पर उनका स्थान बता सकते हैं। इस पुस्तक में एक नक्शा दिया गया है। [3]एवन मेलोन, *दि बुक ऑफ़ फिलिपियंस* (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: इंटरनैशनल वीडियो बाइबल लैसन्स, तिथि नहीं), 1. [4]लुईस कोपलैंड, *पापुलर कोटेशंस फ़ॉर ऑल यूज़र्स,* संशो. संस्क. (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डॉल्फिन बुक्स, डबलडे एंड कं., 1961), 228 में उद्धृत प्लायनी। [5]हम जानते हैं कि लूका इस दल से त्रोआस में मिला था क्योंकि प्रेरितों के काम में उसका विवरण यहां पर, अन्य पुरुष (''वे''; देखें 16:8) से उत्तम पुरुष (''हम''; देखें 16:10, 11) में होता है। [6]हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं क्योंकि अपने विवरण में लूका पौलुस के फिलिप्पी से चले जाने पर (देखें प्रेरितों 17:1) अन्य पुरुष (''वह,'' ''वे'') में वापस चला जाता है। लूका पौलुस के दोबारा फिलिप्पी में से जाने तक (देखें प्रेरितों 20:6) उत्तम पुरुष (''हमें,'' ''हम'') में नहीं लौटा। [7]गेरल्ड एफ़. हाथोर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिपियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), xlviii. [8]जी. कैम्पबेल मोरगन, *लिविंग मैसेजिस ऑफ़ द बुक्स ऑफ़ द बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1982), 229. [9]मेलोन। [10]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्पोजिशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 63.

[11]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स हाउस, 1983), 9. [12]ऐसे व्यवहार की कोशिश करने का महत्व तो है, पर इस विषय पर जो कुछ लिखा गया है उसमें से अधिकांश सरसरी और आत्म केन्द्रित है। आम तौर पर आत्म-निर्भरता पर बल दिया गया है। मसीही व्यक्ति आत्मनिर्भर नहीं बल्कि परमेश्वर-निर्भर है। [13]''मसीह'' इब्रानी भाषा के ''मसायाह'' शब्द का यूनानी समानांतर है। दोनों शब्दों का अर्थ ''अभिषिक्त [किया हुआ]'' है। यहूदियों द्वारा इस शब्द का इस्तेमाल मुख्यतया राजाओं के लिए किया जाता था। ''यीशु'' इब्रानी शब्द ''यहोशू'' का यूनानी रूप है, जो ''यहोशुआ'' का जिसका अर्थ ''यहोवा [प्रभु] बचाता है'' है, लघु रूप है। ''प्रभु'' का अनुवाद यूनानी शब्द *kurios* से किया गया है जिसका अर्थ ''मालिक,'' ''हाकिम'' या ''स्वामी'' है। ''यहोशुआ'' का लघु रूप जिसका अर्थ ''यहोवा [प्रभु] बचाता है'' है। [14]मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध पर ज़ोर देने के लिए फिलिप्पियों की पुस्तक में से अतिरिक्त हवाले दिए जा सकते हैं। हमें उस ''में,'' उस ''के,'' और उस ''के साथ'' होने को कहा गया है; हम काम भी उस ''की ओर से'' करते हैं। पत्र को पढ़ते हुए इस प्रकार की शब्दावली को देखें। [15]2:1 में KJV में ''मसीह में'' का अनुवाद ''मसीह के साथ एक किए गए'' के रूप में है। CJB ''मसीह में'' का अनुवाद ''मसीहा के साथ एकता में'' के रूप में ही करती है।